प्रश्न:- रीतिकाल के उद्भव के कारणों पर विचार करें। (परिस्थिति, प्रेरणास्रोत, पृष्ठभूमि आदि).

उत्तर:- रीतिकाल के उद्भव का एक कारण तो भक्तिकाल के पतन में मौजूद है। आचार्य शुक्ल रीतिकालीन कविता के सीमित भावक्षेत्र, शृंगारप्रियता और साहित्यिक सुरुचि के अभाव की चर्चा करते हुए कहते हैं "इसका कारण जनता की कुरुचि नहीं राजा महाराजाओं की कुरुचि थी जिनके लिए वीरता और कर्मण्यता का जीवन नहीं रह गया था।" यहाँ शुक्लजी ने रीतिकालीन कविता का वर्गाधार स्पष्ट कर दिया है। रीतिकालीन कविता में लक्षणग्रंथ, नायिकाभेद, अलंकार, चमत्कारवाद, अश्लीलता आदि के जो गुण मिलते हैं वे उत्तर कालीन संस्कृत साहित्य के ही प्रभाव हैं। आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में रीतिकाल को एक विचित्र संयोग कहा है। भक्तिकाल की नवजागरणपरक, जनोन्मुखी कविता के बाद दरबारों से बँधी हुई रूढ़िबद्ध, नायिकाभेद, और अलंकारशास्त्र के सहारे टिकी हुई, शब्दकौशल से लदी हुई कविता का आना और लगभग दो सौ वर्षों तक टिका रहना विचित्र संयोग ही नहीं ऐतिहासिक त्रासदी है। आचार्य शुक्ल ने रीतिकालीन कविता के उद्भव के जो कारण बताये आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि

उसी का विकास करती है।

आचार्य द्विवेदी रीतिकालीन कविता पर प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य की सतसई परंपरा, स्तोत्र साहित्य, कामशास्त्रीय ग्रंथ का प्रभाव देखते हैं। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि उन्होंने इस कविता पर संस्कृत के उत्तरकालीन काव्य और काव्यशास्त्र का प्रभाव देखा। इसतरह रीतिकालीन कविता संस्कृत के शास्त्रीयतावाद का पुनरुत्थान है। यदि प्राचीन संस्कृत साहित्य विशेषत: 'रामायण' और महाभारत' के जीवंत रचना तत्वों को

MAY 2003
S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
25 26 27 28 29 30 31

Scanned with CamScanner

लेकर आगे बढ़ा तो उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य की पतनशील परंपरा को आधार बनाकर रीतिकाव्य आगे बढ़ा। रीतिकालीन कविता पर उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य की पतनशीलता के प्रभाव के बारे में द्विवेदीजी कहते हैं कि कविगण शृंगार एवं नायिकाभेद, अलंकार व संचारी आदि भावों के पूर्वनिर्मित वर्गीकरण का आधार लेकर बंधे-सधे सुर में बंधी-सधी बोली की कवायद करने लगे। उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य का प्रभाव ही उसे चालित कर रहा था।

रीतिकालीन कविता पर प्राकृत या अपभ्रंश साहित्य या उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य का प्रभाव दिखा देने से ही कविता के उद्भव की परिस्थितियाँ आलोकित नहीं हो जातीं, इसके लिए आवश्यक है कविता के वर्गाधार को स्पष्ट करना। हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- "रीतिकाल के समाज में दो श्रेणियाँ थीं- एक उत्पादक वर्ग जिसमें किसान से संबंध रखने वाले लोहार, बढ़ई, कहार और जुलाहा आदि जातियाँ थीं। दूसरा भोक्ता वर्ग (राजा, रईस, नवाब) या उसका मददगार था। रीतिकालीन समाज में यही दो वर्ग मिलते हैं- राजा, सामंत, मनसबदार आदि का भोक्ता वर्ग तथा किसानों और श्रमिकों का उत्पादक वर्ग।" द्विवेदी जी ने यहाँ स्पष्ट कर दिया कि रीतिकालीन कविता सामंत वर्ग और सामंती संस्कृति से जुड़ी हुई थी, वह इसी वर्ग और उसकी संस्कृति के वाङ्मय ढाँचे की अभिव्यक्ति थी। द्विवेदीजी के अनुसार इन दो वर्गों के बीच में कवि, कलाकार, चित्रकार, नर्तक आदि कलावंतों का वर्ग था। जो इस वर्ग के लोग आते तो थे उत्पादक वर्ग से लेकिन वे राजा, रईस, नवाब का मनोविनोद करके अपनी जीविका चलाते थे। इन कवियों, चित्रकारों या कलावंतों को जिन राजाओं, रईसों, नवाबों का मनोविनोद करना था उसके जीवन से

JUN 2003
S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
29 30

Scanned with CamScanner

इनका परिचय नहीं था इसलिए अपने कलाकर्म के लिए इन्हें पुस्तकीय ज्ञान की जरूरत थी। यह ज्ञान उन्हें रतिरहस्य आदि कामशास्त्रीय ग्रंथों, दशरूपक आदि नायिकाभेदी ग्रंथों और काव्य चमत्कार पैदा करने के लिए अलंकारशास्त्र के ग्रंथों में ही मिल सकता था। ये सारे ग्रंथ उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य में ही उपलब्ध थे इसलिए ये कवि भक्तिकाल, आदिकाल, अपभ्रंश साहित्य को लांघते हुए सीधे उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य में पहुंच गये। रचनाकार अपनी रचनात्मक जरूरतों के अनुसार ही अपनी परंपरा से जुड़ता है। रीतिकवियों को अपनी दरबारी जरूरतों के अनुरूप सामग्रियाँ उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य में ही मिलीं इसलिए वे सीधे उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य से जुड़े।

डॉ० नगेन्द्र ने रीतिकालीन कविता के उदय के कारणों की ओर संकेत करते हुए कहा- "घोर सामाजिक और राजनीतिक पतन के इस युग में जीवन बाह्य अभिव्यक्तियों से निराश होकर घर की चहारदीवारी में कैद हो गया था, घर में इस समय न शास्त्र चिंतन था न धर्म चिंतन, अभिव्यक्ति का एक ही ढंग था - काम, सेक्स। जीवन की बाह्य असफलताओं से आहत मन नारी के अंगों में मुँह छिपाकर विशुद्ध विभोर हो जाता था। यहाँ डॉ० नगेन्द्र ने सामंतों की कुरुचि को जनता की कुरुचि कहा। यदि मान भी लें कि बाह्य जीवन की असफलताओं से आहत मन नारी के अंगों में मुँह छिपाकर विशुद्ध-विभोर हो जाता था तो उस समय अर्थात उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य काल में जब इस निराशा का कोई कारण नहीं था तो ऐसी कवितायें क्यों लिखी गयीं? रीतिकालीन कविता के लिए तत्कालीन मुसलमानी शासन को जिम्मेदार ठहराना सामंतों

की कुरुचि पर परदा डालने जैसा है। हिन्दी के रीतिकाल के कवि श्रृंगार की शराब में गम-गलत करनेवाले नहीं थे और न ही उनका कार्य क्षेत्र घर की चहारदीवारी तक सीमित था। इन कवियों ने अपनी आकांक्षाओं, श्रृंगारिक भावों की अभिव्यक्ति नहीं की उन्होंने तो उन राजाओं, रईसों, नबावों की काम भावनाओं को अभिव्यक्ति ~~नहीं की उन्होंने तो~~ दी जिनके लिए वीरता और कर्मण्यता का जीवन नहीं रह गया था। हमारे रीतिकालीन कवि जिन राजाओं के दरबारी थे वे मुगल दरबार के दरबारी थे। पूरे देश के सैन्य सुरक्षा की जिम्मेदारी मुगल सल्तनत की थी। उसके अधीनस्थ राजा सेना नहीं रख सकते थे इसलिए अब उनके पास एक ही काम था - विलास। वे सामाजिक और जनहितकारी कार्यों में धन खर्च नहीं करते थे। इनका धन काव्यकला, चित्रकला, वास्तुकला और संगीतकला पर खर्च होता था। उनके विलास के भी दो आयाम थे - शारीरिक और मानसिक। हमारी रीतिकालीन कविता उनके मानसिक विलास का ही सामान थी। दूसरे यह कि चूँकि यह कविता दरबारियों के दरबारी की कविता थी इसलिए इसमें दोहरा दरबारीपन समाहित है।